बालदशन - गिजुभाई बधेका

प्रेम और शांति

अगर हमें दुनिया में सच्ची शांति प्राप्त करनी है और अगर हमें युद्ध के विरुद्ध लड़ाई लड़नी है तो हमें बालकों से इसका आरंभ करना होगा, और अगर बालक अपनी स्वभाविक निर्दोषता के साथ बडे होंगे, तो हमें संघष नहीं करना पड़ेगा, हमें निष्फल और निरथक प्रस्ताव पास नहीं करने पड़ेंगें। बल्कि हम प्रेम से अधिक प्रेम की ओर और शांति से अधिक शांति की ओर बढ़ेंगे - यहां तक कि अंत में दुनिया के चारों कोने उस प्रेम और शांति से भर जायेंगे, जिसके लिए आज सारी दुनिया जाने या अनजाने तरस और तड़प रही हे।

"यंग इंडिया' - 9-]-93]

प्राचीन काल के विद्यार्थी

प्राचीन काल में हमारे विद्यार्थी ब्रहमचारी, अथात ईश्वर से डरकर चलने वाले, कहे जाते हैं। राजा-महाराजा और समाज के बडे-बूढ़े उनका सम्मान करते थे। राष्ट्र स्वेच्छा से उनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी अपने सिर लेता था और वे लोग बदले में राष्ट्र की सौगुनी बलवती आत्माएं, सौगुने शक्तिशाली मस्तिष्क और सौगुनी बलवती भुजाएं अपण करते थे।

"यंग इंडिया' 9-6 972 मोहनदास करमचन्द गांधी

। - बालक

बालक माता-पिता की आत्मा हे।
बालक घर का आभूषण है।
बालक आंगन की शोभा है।
बालक कूल का दीपक हे।
बालक तो हमारे जीवन-सुख की प्रफूल्ल और प्रसन्न खिलती हुई कली है।

2 - बालक की देन

आपके शोक को कौन भुलाता है?
अपनी थकान को कौन मिटाता है?
आपको बांझपन से कौन बचाता हे?
आपके घर को किलकारियों से कौन भरता है?
आपकी हंसी को कौन कायम रखता हे? बालक!
प्रभु को पाने के लिये बालक की पूजा कीजिए

3 - क्राति और शांति

ईश्वर की सृष्टि में बालक उसका एक अद्भुत और निर्दोष सृजन है।
हम बालक के विकास की गति को पहतचानें।
जिसने आज के बालक को स्वतंत्र और स्वाधीन बनने की अनुकूलता कर दी हे,
उसने मनुष्य जाति को सवागीण क्रोाति और सम्पूण शांति के माग पर चलता कर दिया है।

4 - जवाब दीजिये

मैं खेलूं कहां?
मैं कूदूं कहां?
मैं गाऊं कहां?
मैं किसके साथ बात करूं?
बोलता हुं तो मां को बुरा लगता हे।
खेलता हुं तो पिता खीजते हें।
कूदता हुं, तो बैठ जाने को कहते हें।
गाता हुं, तो चुप रहने को कहते हें।
अब आप ही कहिए कि मैं कहां जाऊं? क्या करूं?

5 - खुद काम करने दीजिए

बालक को खुद काम करने का शौक होता है। उसे रूमाल धोने दीजिए।
उसे प्याला भरने दीजिए।
उसे फूल सजाने दीजिए।
उसे कटोरी मांजने दीजिए।
उसे मटर की फली के दाने निकालने दीजिए। उसे परोसने दीजिए।
बालक को सब काम खुद ही करने दीजिए। उसकी अपनी मर्जी से करने दीजिए।
उसकी अपनी रीति से करने दीजिए।

6 - परख

हमारी आंख में अमृत है या विष,
हमारी बोली में मिठास है या कड़ुआहट, हमारे स्पश में कोमलता है या ककशता,
हमारे दिल में शांति है या अशांति,
हमारे मन में आदर है या अनादर,
बालक इन बातों को तुरंत ही ताड़ लेता है।
बालक हमें एकदम पहचान लेता है।

7 - दुश्मन

'सो जा, नहीं तो बाबा पकड़ कर ले जाएगा।'
'खा ले, नहीं तो चोर उठा कर ले भागेगा।'
“बाघ आया !'
“बाबा आया !!
“सिपाही आया !'
“चुप रह, नहीं तो कमरे में बंद कर दूंगी।'
“पढ़ने बैठ नहीं तो पिटाई करूंगी।'
जो इस तरह अपने बालकों को डराते हैं, वे बालकों के दुश्मन हें।

8 - हम क्या सोचेंगे?

बालक का हास्य जीवन की प्रफुल्लता हे।
बालक का रुदन जीवन की अकुलाहट है।
बालक के हास्य से फूल खिलता है।
बालक के रुदन से फूल मुरझाता है।
हमारे घरों में बाल-हास्य की मंगल शहनाइयों के बदले
बाल-रूदन के रण-वाद्य क्यों बजते हैं?
क्या हम सोचेंगे?

9 - पृथ्वी पर स्वग

यदि हम बालकों को अपने घरों में उचित स्थान दें,
तो हमारी इस पृथ्वी पर ही स्वग की सृष्टि हो सके।
स्वग बालक के सुख में है।
स्वग बालक के स्वास्थ्य में है।
स्वग बालक की प्रसन्नता में है।
स्वग बालक की निर्दोष मस्ती में है।
स्वग बालक के गाने में और गुनगुनाने में है।

10 - महान आत्मा

बालक की देह छोटी है, लेकिन उसकी आत्मा महान है।
बालक की देह विकासमान हे।
बालक की शक्तियां विकासशील हैं।
लेकिन उसकी आत्मा तो सम्पूण है।
हम उस आत्मा का सम्मान करें।
अपनी गलत रीति-नीति से हम बालक की शुद्ध आत्मा को भ्रष्ट और कलुषित न करें।

11 - हम समझें

बालक सम्पूण मनुष्य है।
बालक में बुद्धि है, भावना है, मन है, समझ है।
बालक में भाव और अभाव है, रुचि और अरुचि है।
हम बालक की इच्छाओं को पहचानें।
हम बालक की भावनाओं को समझें।
बालक नन्हा और निर्दोष है।
अपने अहंकार के कारण हम बालक का तिरस्कार न करें।
अपने अभिमान के कारण हम बालक का अपमान न करें।

12 - चाह

बालक को खुद खाना है, आप उसे खिलाइए मत।
बालक को खुद नहाना है, आप उसे नहलाइए मत।
बालक को खुद चलना है, आप उसका हाथ पकड़िए मत।
बालक को खुद गाना है, आप उससे गवाइए मत।
बालक को खुद खेलना है, आप उसके बीच में आइए मत।
क्योंकि बालक स्वावलम्बन चाहता है।

13 - क्या इतना भी नहीं करेंगे?

क्लब में जाना छोड़कर बालक को बगीचे में ले जाइए।
गपशप करने के बदले बालक को चिडियाघर दिखाने ले जाइए।
अखबार पढ़ना छोड़कर बालक की बातें सुनिए।
रात सुलाते समय बालक को बढ़िया कहानियां सुनाइए।
बालक के हर काम में गहरी दिलचस्पी दिखाइए।

14 - नौकर की दया

सचमुच वह घर बड़भागी घर है।
जहां पति-पत्नी प्रेमपूवक रहते हें।
जिसके आंगन में गुलाब के फूल के से बालक खेलते-कूदते हैं।
जहां माता-पिता बालकों को अपने प्राणों की तरह सहेजते हैं।
जहां बालक बड़ों से आदर पाते हैं।
और जहां बालकों को घर के नौकरों की दया पर जीना नहीं पड़ता है।
सचमुच वह घर एक बड़भागी घर है।

15 - आत्म सुधार

बालक का सम्मान इसलिए कीजिए, कि हममें आत्म-सम्मान की भावना जागे।
बालक को डाटिए-डपटिए मत,
जिससे डांटने-डपटने की हमारी गलत आदत छूटने लगे।
बालक को मारिए-पीटिए मत,
जिससे मारने-पीटने की हमारी पशु-वृत्ति नष्ट हो सके।
इस तरह अपने को सुधारकर ही
हम अपने बालकों का सही विकास कर सकेंगे।

16 - भय और लालच

मां-बाप और शिक्षक समझ लें कि
मारने से या ललचाने से बालक सुधर नहीं सकते,
उलटे वे बिगड़ते हैं।
मारने से बालक में गुंडापन आ जाता है।
ललचाने से बालक लालची बन जाता है।
भय और लालच से बालक बेशरम, ढीठ और दीन-हीन बन जाता है।

17 - सच्ची शाला : घर

अगर मां-बाप यह मानते हैं कि
स्वयं चाहे जैसा आचरण करके भी
वे अपने बालकों को संस्कारी बना सकेगें,
तो वे बड़ी भूल करते हैं।
मां-बाप और घर, दोनों दुनिया की
सबसे बड़ी और शक्तिशाली शालाएं हें।
घर में बिगाड़े गए बालक को भगवान भी सुधार नहीं सकता!

18 - प्रकृति का उपहार

प्रकृति से दूर रहने वाला बालक, प्रकृति के भेद को कैसे जानेगा?
जगमगाती चांदनी, कलकल बहती नदी,
खेत की मिट्टी, बाड़ी के घर,
टेकरी के कंकर, खुली हवा और आसमान के रंग,
ये सब वे उपहार हैं, जो बालक को प्रकृति से प्राप्त हुए हैं।
बालक को जी भरकर प्रकृति का आनन्द लूटने दीजिए।

19 - गतिमान

बालक पल-पल में बढ़नेवाला प्राणी है।
बालक की दृष्टि प्रश्नात्मक है।
बालक का हृदय उद्गारात्मक है।
बालक के व्याकरण में प्रश्न और उद्गार हैं।
लेकिन पूणविराम कहीं नहीं हें।
बालक का मतलब है, मूतिमन्त गति-
अल्प विराम भी नहीं।

20 - नया युग नागों की पूजा का युग बीत चुका है।

प्रेतों की पूजा का युग बीत चुका है।
पत्थरों की पूजा का युग बीत चुका हे।
मानवों की पूजा का युग भी बीत चुका है।
अब तो, बालकों की पूजा का युग आया है।
बालकों की सेवा ही उनकी पूजा हे।

21 - झगड़े

माता-पिता के और बड़ों के झगड़ों के कारण
घर का वातावरण अकसर अशान्त रहने लगता है।
इससे बालक बहुत परेशान हो उठते हें।
और किसी कारण नहीं, तो अपने बालकों के कारण ही
हम घर में हेलमेल से भरा जीवन जीना सीख लें।
घर के शान्त और सुखी वातावरण में
बालक का महान शिक्षण निहित है।

22 - गिजुभाई की बात

बालकों ने प्रेम देकर मुझे निहाल किया।
बालकों ने मुझे नया जीवन दिया।
बालकों को सिखाते हुए मैं ही बहुत सीखा।
बालकों को पढाते हुए मैं ही बहुत पढ़ा।
बालकों का गुरु बनकर मैं उनके गुरु-पद को समझ सका।
यह कोई कविता नहीं है।
यह तो मेरे अनुभव की बात हे।

23 - दिव्य संदेश

बालदेव की एकोपासना कीजिए।
अकेले इस एक ही काम में बराबर लगे रहिए।
सफलता की यही चाबी हे।
बालकों द्वारा प्रभु के संदेश को ग्रहण करने की बात मनुष्य को सूझती क्यों नहीं है?
बालक का संदेश किसी एक जाति या देश के लिए नहीं है।
बालक का संदेश तो समूची मनुष्य-जाति के लिए एक दिव्य संदेश हे।

24 - जीवित ग्रंथ

जो पुस्तकें पढ़कर ज्ञान प्राप्त करेंगे, वे शिक्षक बनेंगे।
जो बालकों को पढ़कर ज्ञान प्राप्त करेंगे, वे शिक्षा-शास्त्री बनेंगे।
शिक्षा शास्त्री के लिए हर एक बालक
एक समथ, अद्वितीय और जीवित ग्रंथ हे।

25 - बालक की शक्ति

आप सारी दुनिया को धोखा दे सकते हैं,
लेकिन अपने बालकों को धोखा नहीं दे सकते हैं।
आप सबको सब कहीं बेवकूफ बना सकते हें,
लेकिन अपने बालकों को कभी बेवकूफ नहीं बना सकते।
आप सबसे सब कुछ छिपा सकते हें,
लेकिन अपने बालकों से कुछ भी नहीं छिपा सकते।
बालक सवज्ञ हैं, सवव्यापक हैं, सवशक्तिमान हें।

26 - बातें बेकार हें

क्या हमारे पढ़ने, सोचने और लिखने-भर से
हमारा काम पूरा हो जाता है।
नहीं, हमें तो शिक्षा के नये-नये मन्दिरों का निमाण करना हे,
और उन मन्दिरों में अब तक अपूज्य रही सरस्वती देवी की स्थापना करनी है।
बालकों के लिए नये युग का आरम्भ हुआ है।
केवल बातें करने से अब कुछ बनेगा नहीं।
कुछ कीजिए! कुछ करवाइये!!

27 - एडी का पसीना चोटी तक

बालक के साथ काम करना जितना आसान है, उतना ही मुश्किल भी है।
बाल-स्वभाव का ज्ञान, बालक के लिए गहरी भावना और सम्मान,
बालक के व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा और उसके प्रति आन्तरिक प्रेम,
इस सबको प्राप्त करने में एडी का पसीना चोटी तक पहुंचाना पड़ता है।

28 - याद रखिए

गली की निर्दोष धूल बालक को
चन्दन से भी अधिक प्यारी लगती है।
हवा की मीठी लहरें बालक के लिए
मां के चुम्बन से भी अधिक मीठी होती हैं।
सूरज की कोमल किरणें बालक को
हमारे हाथ से भी अधिक मुलायम लगती हें।

29 - चैन कैसे पडे?

जब तक बालक घरों में मार खाते हैं,
और विद्यालयों में गालियां खाते हें,
तब तक मुझे चैन केसे पडे?
जब तक बालाकों के लिए पाठशालाएं, वाचनालय,
बाग-बगीचे और क्रीडांगन न बनें,
तब तक मुझे चैन केसे पडे?
जब तक बालकों को प्रेम और सम्मान नहीं मिलता,
तब तक मुझे चैन कैसे पडे?

30 - शिक्षक के लिए सब समान

बालक कई प्रकार के होते हें।
अपंग और अंधे, लूले और लंगडे, मूख और मंद-बुद्धि,
काले और कुरूप, कोढ़ी और खाज-खुजली वाले,
इसी तरह खूबसूरत, ताजे-तगड़े, चपल, चंचल, होशियार और चलते-पुरजे।
सच्चे शिक्षक की नजर में ये सब समान रूप से भगवान के ही बालक हैं।

31- बाल-क्रीडांगण

क्या भारत के लाखों-करोड़ों बालकों को हम हमेशा गन्दी गलियों में ही भटकने देंगे?
या तो हम बालकों को घरों में काम करने के मौके दें,
या गली-गली में और चौराहों-चौराहों पर बाल क्रीडांगन खडे करें।
ये बाल क्रीडांगन ही बाल विकास के सबसे आसान, अच्छे और सस्ते साधन हें।

32 - करेंगे या मरेंगे

मैं पल-पल में नन्हें बच्चों में विराजमान
महान आत्मा के दशन करता हुं।
यह दशन ही मुझे इस बात के लिए प्रेरित कर रहा है
कि मैं बालकों के अधिकारों की स्थापना करने के लिए जिन्दा हुं,
और इस काम को करते-करते ही मर-मिट जाऊंगा।

33- धम का शिक्षण

धम की बातें कह कर,
धम के काम करवा कर,
धम की रूढियों की पोशाकें पहना कर,
हम बालकों को कभी धमाचरण करने वाला बना नहीं सकेंगे।
धम न किसी पुस्तक में है, और न किसी उपदेश में हे।
धम कम-काण्ड की जड़ता में भी नहीं है।
धम तो मनुष्य के जीवन में हे।
अगर शिक्षक और माता-पिता अपने जीवन को धामिक बनाए रखेंगे,
तो बालक को धम का शिक्षण मिलता रहेगा।

34 - अपनी ओर देख

जब तू प्रभु नहीं है तो अपने बालकों का प्रभु क्यों बनता है।
जब तू सवज्ञ नहीं है, तो बालकों की अल्पज्ञता पर क्यों हंसता है?
जब तू सवशक्तिमान नहीं है, तो बालकों की अल्प शक्ति पर क्यों चिढ़ता हे?
जब तू संपूण नहीं है, तो बालकों की अपूणता पर क्यों क्षुब्ध होता है?
पहले तू अपनी ओर देख, फिर अपने बालकों की ओर देख!

अंत